श्री लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रं

नाम्नां साष्टसहस्रं च ब्रूहि गार्ग्य महामते |
महालक्ष्म्या महादेव्याः भुक्तिमुक्त्यर्थसिद्धये || 1 ||

गार्ग्य उवाच |
सनत्कुमारमासीनं द्वादशादित्यसन्निभं |
अपृच्छन्योगिनो भक्त्या योगिनामर्थसिद्धये || 2 ||

सर्वलौकिककर्मभ्यो विमुक्तानां हिताय वै |
भुक्तिमुक्तिप्रदं जप्यमनुब्रूहि दयानिधे || 3 ||

सनत्कुमार भगवन् सर्वज्ञोऽसि विशेषतः |
आस्तिक्यसिद्धये नृणां क्षिप्रधर्मार्थसाधनं || 4 ||

खिद्यंति मानवास्सर्वे धनाभावेन केवलं |
सिद्ध्यंति धनिनोऽन्यस्य नैव धर्मार्थकामनाः || 5 ||

दारिद्र्यध्वंसिनी नाम केन विद्या प्रकीर्तिता |
केन वा ब्रह्मविद्याऽपि केन मृत्युविनाशिनी || 6 ||

सर्वासां सारभूतैका विद्यानां केन कीर्तिता |
प्रत्यक्षसिद्धिदा ब्रह्मन् तामाचक्ष्व दयानिधे || 7 ||

सनत्कुमार उवाच |
साधु पृष्टं महाभागाः सर्वलोकहितैषिणः |
महतामेष धर्मश्च नान्येषामिति मे मतिः || 8 ||

ब्रह्मविष्णुमहादेवमहेंद्रादिमहात्मभिः |
संप्रोक्तं कथयाम्यद्य लक्ष्मीनामसहस्रकं || 9 ||

यस्योच्चारणमात्रेण दारिद्र्यान्मुच्यते नरः |
किं पुनस्तज्जपाज्जापी सर्वेष्टार्थानवाप्नुयात् || 10 ||

अस्य श्रीलक्ष्मीदिव्यसहस्रनामस्तोत्र महामंत्रस्य आनंदकर्दमचिक्लीतेंदिरासुतादयो महात्मानो महर्षयः अनुष्टुप्छंदः विष्णुमाया शक्तिः महालक्ष्मीः परादेवता श्रीमहालक्ष्मी प्रसादद्वारा सर्वेष्टार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः | श्रीमित्यादि षडंगन्यासः |

ध्यानं |
पद्मनाभप्रियां देवीं पद्माक्षीं पद्मवासिनीं |
पद्मवक्त्रां पद्महस्तां वंदे पद्मामहर्निशं || 1 ||

पूर्णेंदुवदनां दिव्यरत्नाभरणभूषितां |
वरदाभयहस्ताढ्यां ध्यायेच्चंद्रसहोदरीं || 2 ||

इच्छारूपां भगवतस्सच्चिदानंदरूपिणीं |
सर्वज्ञां सर्वजननीं विष्णुवक्षस्स्थलालयां |
दयाळुमनिशं ध्यायेत्सुखसिद्धिस्वरूपिणीं || 3 ||

स्तोत्रं –
ॐ नित्यागतानंतनित्या नंदिनी जनरंजनी |
नित्यप्रकाशिनी चैव स्वप्रकाशस्वरूपिणी || 1 ||

महालक्ष्मीर्महाकाळी महाकन्या सरस्वती |
भोगवैभवसंधात्री भक्तानुग्रहकारिणी || 2 ||

ईशावास्या महामाया महादेवी महेश्वरी |
ह्लल्लेखा परमा शक्तिर्मातृकाबीजरूपिणी || 3 ||

नित्यानंदा नित्यबोधा नादिनी जनमोदिनी |
सत्यप्रत्ययनी चैव स्वप्रकाशात्मरूपिणी || 4 ||

त्रिपुरा भैरवी विद्या हंसा वागीश्वरी शिवा |
वाग्देवी च महारात्रिः कालरात्रिस्त्रिलोचना || 5 ||

भद्रकाळी कराळी च महाकाळी तिलोत्तमा |
काळी कराळवक्त्रांता कामाक्षी कामदा शुभा || 6 ||

चंडिका चंडरूपेशा चामुंडा चक्रधारिणी |
त्रैलोक्यजयिनी देवी त्रैलोक्यविजयोत्तमा || 7 ||

सिद्धलक्ष्मीः क्रियालक्ष्मीर्मोक्षलक्ष्मीः प्रसादिनी |
उमा भगवती दुर्गा चांद्री दाक्षायणी शिवा || 8 ||

प्रत्यंगिरा धरा वेला लोकमाता हरिप्रिया |
पार्वती परमा देवी ब्रह्मविद्याप्रदायिनी || 9 ||

अरूपा बहुरूपा च विरूपा विश्वरूपिणी |
पंचभूतात्मिका वाणी पंचभूतात्मिका परा || 10 ||

काळी मा पंचिका वाग्मी हविःप्रत्यधिदेवता |
देवमाता सुरेशाना देवगर्भाऽंबिका धृतिः || 11 ||

संख्या जातिः क्रियाशक्तिः प्रकृतिर्मोहिनी मही |
यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या विभावरी || 12 ||

ज्योतिष्मती महामाता सर्वमंत्रफलप्रदा |
दारिद्र्यध्वंसिनी देवी हृदयग्रंथिभेदिनी || 13 ||

सहस्रादित्यसंकाशा चंद्रिका चंद्ररूपिणी |
गायत्री सोमसंभूतिस्सावित्री प्रणवात्मिका || 14 ||

शांकरी वैष्णवी ब्राह्मी सर्वदेवनमस्कृता |
सेव्यदुर्गा कुबेराक्षी करवीरनिवासिनी || 15 ||

जया च विजया चैव जयंती चाऽपराजिता |
कुब्जिका काळिका शास्त्री वीणापुस्तकधारिणी || 16 ||

सर्वज्ञशक्तिः श्रीशक्तिर्ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका |
इडापिंगळिकामध्यमृणाळीतंतुरूपिणी || 17 ||

यज्ञेशानी प्रथा दीक्षा दक्षिणा सर्वमोहिनी |
अष्टांगयोगिनी देवी निर्बीजध्यानगोचरा || 18 ||

सर्वतीर्थस्थिता शुद्धा सर्वपर्वतवासिनी |
वेदशास्त्रप्रमा देवी षडंगादिपदक्रमा || 19 ||

शिवा धात्री शुभानंदा यज्ञकर्मस्वरूपिणी |
व्रतिनी मेनका देवी ब्रह्माणी ब्रह्मचारिणी || 20 ||

एकाक्षरपरा तारा भवबंधविनाशिनी |
विश्वंभरा धराधारा निराधाराऽधिकस्वरा || 21 ||

राका कुहूरमावास्या पूर्णिमाऽनुमतिर्द्युतिः |
सिनीवाली शिवाऽवश्या वैश्वदेवी पिशंगिला || 22 ||

पिप्पला च विशालाक्षी रक्षोघ्नी वृष्टिकारिणी |
दुष्टविद्राविणी देवी सर्वोपद्रवनाशिनी || 23 ||

शारदा शरसंधाना सर्वशस्त्रस्वरूपिणी |
युद्धमध्यस्थिता देवी सर्वभूतप्रभंजनी || 24 ||

अयुद्धा युद्धरूपा च शांता शांतिस्वरूपिणी |
गंगा सरस्वतीवेणीयमुनानर्मदापगा || 25 ||

समुद्रवसनावासा ब्रह्मांडश्रेणिमेखला |
पंचवक्त्रा दशभुजा शुद्धस्फटिकसन्निभा || 26 ||

रक्ता कृष्णा सिता पीता सर्ववर्णा निरीश्वरी |
काळिका चक्रिका देवी सत्या तु बटुकास्थिता || 27 ||

तरुणी वारुणी नारी ज्येष्ठादेवी सुरेश्वरी |
विश्वंभराधरा कर्त्री गलार्गलविभंजनी || 28 ||

संध्यारात्रिर्दिवाज्योत्स्ना कलाकाष्ठा निमेषिका |
उर्वी कात्यायनी शुभ्रा संसारार्णवतारिणी || 29 ||

कपिला कीलिकाऽशोका मल्लिकानवमल्लिका |
देविका नंदिका शांता भंजिका भयभंजिका || 30 ||

कौशिकी वैदिकी देवी सौरी रूपाधिकाऽतिभा |
दिग्वस्त्रा नववस्त्रा च कन्यका कमलोद्भवा || 31 ||

श्रीस्सौम्यलक्षणाऽतीतदुर्गा सूत्रप्रबोधिका |
श्रद्धा मेधा कृतिः प्रज्ञा धारणा कांतिरेव च || 32 ||

श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्धन्या भूतिरिष्टिर्मनीषिणी |
विरक्तिर्व्यापिनी माया सर्वमायाप्रभंजनी || 33 ||

माहेंद्री मंत्रिणी सिंही चेंद्रजालस्वरूपिणी |
अवस्थात्रयनिर्मुक्ता गुणत्रयविवर्जिता || 34 ||

ईषणत्रयनिर्मुक्ता सर्वरोगविवर्जिता |
योगिध्यानांतगम्या च योगध्यानपरायणा || 35 ||

त्रयीशिखा विशेषज्ञा वेदांतज्ञानरूपिणी |
भारती कमला भाषा पद्मा पद्मवती कृतिः || 36 ||

गौतमी गोमती गौरी ईशाना हंसवाहिनी |
नारायणी प्रभाधारा जाह्नवी शंकरात्मजा || 37 ||

चित्रघंटा सुनंदा श्रीर्मानवी मनुसंभवा |
स्तंभिनी क्षोभिणी मारी भ्रामिणी शत्रुमारिणी || 38 ||

मोहिनी द्वेषिणी वीरा अघोरा रुद्ररूपिणी |
रुद्रैकादशिनी पुण्या कल्याणी लाभकारिणी || 39 ||

देवदुर्गा महादुर्गा स्वप्नदुर्गाऽष्टभैरवी |
सूर्यचंद्राग्निरूपा च ग्रहनक्षत्ररूपिणी || 40 ||

बिंदुनादकळातीता बिंदुनादकळात्मिका |
दशवायुजयाकारा कळाषोडशसंयुता || 41 ||

काश्यपी कमलादेवी नादचक्रनिवासिनी |
मृडाधारा स्थिरा गुह्या देविका चक्ररूपिणी || 42 ||

अविद्या शार्वरी भुंजा जंभासुरनिबर्हिणी |
श्रीकाया श्रीकला शुभ्रा कर्मनिर्मूलकारिणी || 43 ||

आदिलक्ष्मीर्गुणाधारा पंचब्रह्मात्मिका परा |
श्रुतिर्ब्रह्ममुखावासा सर्वसंपत्तिरूपिणी || 44 ||

मृतसंजीवनी मैत्री कामिनी कामवर्जिता |
निर्वाणमार्गदा देवी हंसिनी काशिका क्षमा || 45 ||

सपर्या गुणिनी भिन्ना निर्गुणा खंडिताशुभा |
स्वामिनी वेदिनी शक्या शांबरी चक्रधारिणी || 46 ||

दंडिनी मुंडिनी व्याघ्री शिखिनी सोमसंहतिः |
चिंतामणिश्चिदानंदा पंचबाणप्रबोधिनी || 47 ||

बाणश्रेणिस्सहस्राक्षी सहस्रभुजपादुका |
संध्यावलिस्त्रिसंध्याख्या ब्रह्मांडमणिभूषणा || 48 ||

वासवी वारुणीसेना कुलिका मंत्ररंजनी |
जितप्राणस्वरूपा च कांता काम्यवरप्रदा || 49 ||

मंत्रब्राह्मणविद्यार्था नादरूपा हविष्मती |
आथर्वणिः श्रुतिः शून्या कल्पनावर्जिता सती || 50 ||

सत्ताजातिः प्रमाऽमेयाऽप्रमितिः प्राणदा गतिः |
अवर्णा पंचवर्णा च सर्वदा भुवनेश्वरी || 51 ||

त्रैलोक्यमोहिनी विद्या सर्वभर्त्री क्षराऽक्षरा |
हिरण्यवर्णा हरिणी सर्वोपद्रवनाशिनी || 52 ||

कैवल्यपदवीरेखा सूर्यमंडलसंस्थिता |
सोममंडलमध्यस्था वह्निमंडलसंस्थिता || 53 ||

वायुमंडलमध्यस्था व्योममंडलसंस्थिता |
चक्रिका चक्रमध्यस्था चक्रमार्गप्रवर्तिनी || 54 ||

कोकिलाकुलचक्रेशा पक्षतिः पंक्तिपावनी |
सर्वसिद्धांतमार्गस्था षड्वर्णावरवर्जिता || 55 ||

शररुद्रहरा हंत्री सर्वसंहारकारिणी |
पुरुषा पौरुषी तुष्टिस्सर्वतंत्रप्रसूतिका || 56 ||

अर्धनारीश्वरी देवी सर्वविद्याप्रदायिनी |
भार्गवी याजुषीविद्या सर्वोपनिषदास्थिता || 57 || [भूजुषीविद्या]

व्योमकेशाखिलप्राणा पंचकोशविलक्षणा |
पंचकोशात्मिका प्रत्यक्पंचब्रह्मात्मिका शिवा || 58 ||

जगज्जराजनित्री च पंचकर्मप्रसूतिका |
वाग्देव्याभरणाकारा सर्वकाम्यस्थितास्थितिः || 59 ||

अष्टादशचतुष्षष्टिपीठिका विद्ययायुता |
कालिकाकर्षणश्यामा यक्षिणी किन्नरेश्वरी || 60 ||

केतकी मल्लिकाऽशोका वाराही धरणी ध्रुवा |
नारसिंही महोग्रास्या भक्तानामार्तिनाशिनी || 61 ||

अंतर्बला स्थिरा लक्ष्मीर्जरामरणनाशिनी |
श्रीरंजिता महाकाया सोमसूर्याग्निलोचना || 62 ||

अदितिर्देवमाता च अष्टपुत्राऽष्टयोगिनी |
अष्टप्रकृतिरष्टाष्टविभ्राजद्विकृताकृतिः || 63 ||

दुर्भिक्षध्वंसिनी देवी सीता सत्या च रुक्मिणी |
ख्यातिजा भार्गवी देवी देवयोनिस्तपस्विनी || 64 ||

शाकंभरी महाशोणा गरुडोपरिसंस्थिता |
सिंहगा व्याघ्रगा देवी वायुगा च महाद्रिगा || 65 ||

अकारादिक्षकारांता सर्वविद्याधिदेवता |
मंत्रव्याख्याननिपुणा ज्योतिश्शास्त्रैकलोचना || 66 ||

इडापिंगळिकामध्यसुषुम्ना ग्रंथिभेदिनी |
कालचक्राश्रयोपेता कालचक्रस्वरूपिणी || 67 ||

वैशारदी मतिश्रेष्ठा वरिष्ठा सर्वदीपिका |
वैनायकी वरारोहा श्रोणिवेला बहिर्वळिः || 68 ||

जंभिनी जृंभिणी जंभकारिणी गणकारिका | [जृंभ]
शरणी चक्रिकाऽनंता सर्वव्याधिचिकित्सकी || 69 ||

देवकी देवसंकाशा वारिधिः करुणाकरा |
शर्वरी सर्वसंपन्ना सर्वपापप्रभंजनी || 70 ||

एकमात्रा द्विमात्रा च त्रिमात्रा च तथा परा |
अर्धमात्रा परा सूक्ष्मा सूक्ष्मार्थार्थपराऽपरा || 71 ||

एकवीरा विशेषाख्या षष्ठीदेवी मनस्विनी |
नैष्कर्म्या निष्कलालोका ज्ञानकर्माधिका गुणा || 72 ||

सबंध्वानंदसंदोहा व्योमाकाराऽनिरूपिता |
गद्यपद्यात्मिका वाणी सर्वालंकारसंयुता || 73 ||

साधुबंधपदन्यासा सर्वौको घटिकावळिः |
षट्कर्मा कर्कशाकारा सर्वकर्मविवर्जिता || 74 ||

आदित्यवर्णा चापर्णा कामिनी वररूपिणी |
ब्रह्माणी ब्रह्मसंताना वेदवागीश्वरी शिवा || 75 ||

पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्रागमश्रुता |
सद्योवेदवती सर्वा हंसी विद्याधिदेवता || 76 ||

विश्वेश्वरी जगद्धात्री विश्वनिर्माणकारिणी |
वैदिकी वेदरूपा च कालिका कालरूपिणी || 77 ||

नारायणी महादेवी सर्वतत्त्वप्रवर्तिनी |
हिरण्यवर्णरूपा च हिरण्यपदसंभवा || 78 ||

कैवल्यपदवी पुण्या कैवल्यज्ञानलक्षिता |
ब्रह्मसंपत्तिरूपा च ब्रह्मसंपत्तिकारिणी || 79 ||

वारुणी वारुणाराध्या सर्वकर्मप्रवर्तिनी |
एकाक्षरपराऽऽयुक्ता सर्वदारिद्र्यभंजिनी || 80 ||

पाशांकुशान्विता दिव्या वीणाव्याख्याक्षसूत्रभृत् |
एकमूर्तिस्त्रयीमूर्तिर्मधुकैटभभंजिनी || 81 ||

सांख्या सांख्यवती ज्वाला ज्वलंती कामरूपिणी |
जाग्रंती सर्वसंपत्तिस्सुषुप्ता स्वेष्टदायिनी || 82 ||

कपालिनी महादंष्ट्रा भ्रुकुटीकुटिलानना |
सर्वावासा सुवासा च बृहत्यष्टिश्च शक्वरी || 83 ||

छंदोगणप्रतिष्ठा च कल्माषी करुणात्मिका |
चक्षुष्मती महाघोषा खड्गचर्मधराऽशनिः || 84 ||

शिल्पवैचित्र्यविद्योता सर्वतोभद्रवासिनी |
अचिंत्यलक्षणाकारा सूत्रभाष्यनिबंधना || 85 ||

सर्ववेदार्थसंपत्तिः सर्वशास्त्रार्थमातृका |
अकारादिक्षकारांतसर्ववर्णकृतस्थला || 86 ||

सर्वलक्ष्मीस्सदानंदा सारविद्या सदाशिवा |
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च खेचरीरूपगोच्छ्रिता || 87 ||

अणिमादिगुणोपेता परा काष्ठा परा गतिः |
हंसयुक्तविमानस्था हंसारूढा शशिप्रभा || 88 ||

भवानी वासनाशक्तिराकृतिस्थाखिलाऽखिला |
तंत्रहेतुर्विचित्रांगी व्योमगंगाविनोदिनी || 89 ||

वर्षा च वार्षिका चैव ऋग्यजुस्सामरूपिणी |
महानदी नदीपुण्याऽगण्यपुण्यगुणक्रिया || 90 ||

समाधिगतलभ्यार्था श्रोतव्या स्वप्रिया घृणा |
नामाक्षरपरा देवी उपसर्गनखांचिता || 91 ||

निपातोरुद्वयीजंघा मातृका मंत्ररूपिणी |
आसीना च शयाना च तिष्ठंती धावनाधिका || 92 ||

लक्ष्यलक्षणयोगाढ्या ताद्रूप्यगणनाकृतिः |
सैकरूपा नैकरूपा सेंदुरूपा तदाकृतिः || 93 ||

समासतद्धिताकारा विभक्तिवचनात्मिका |
स्वाहाकारा स्वधाकारा श्रीपत्यर्धांगनंदिनी || 94 ||

गंभीरा गहना गुह्या योनिलिंगार्धधारिणी |
शेषवासुकिसंसेव्या चपला वरवर्णिनी || 95 ||

कारुण्याकारसंपत्तिः कीलकृन्मंत्रकीलिका |
शक्तिबीजात्मिका सर्वमंत्रेष्टाऽक्षयकामना || 96 ||

आग्नेयी पार्थिवा आप्या वायव्या व्योमकेतना |
सत्यज्ञानात्मिका नंदा ब्राह्मी ब्रह्म सनातनी || 97 ||

अविद्यावासना मायाप्रकृतिस्सर्वमोहिनी |
शक्तिर्धारणशक्तिश्च चिदचिच्छक्तियोगिनी || 98 ||

वक्त्रारुणा महामाया मरीचिर्मदमर्दिनी |
विराट् स्वाहा स्वधा शुद्धा निरुपास्तिस्सुभक्तिगा || 99 ||

निरूपिताद्वयी विद्या नित्यानित्यस्वरूपिणी |
वैराजमार्गसंचारा सर्वसत्पथदर्शिनी || 100 ||

जालंधरी मृडानी च भवानी भवभंजनी |
त्रैकालिकज्ञानतंतुस्त्रिकालज्ञानदायिनी || 101 ||

नादातीता स्मृतिः प्रज्ञा धात्रीरूपा त्रिपुष्करा |
पराजिता विधानज्ञा विशेषितगुणात्मिका || 102 ||

हिरण्यकेशिनी हेमब्रह्मसूत्रविचक्षणा |
असंख्येयपरार्धांतस्वरव्यंजनवैखरी || 103 ||

मधुजिह्वा मधुमती मधुमासोदया मधुः |
माधवी च महाभागा मेघगंभीरनिस्वना || 104 ||

ब्रह्मविष्णुमहेशादिज्ञातव्यार्थविशेषगा |
नाभौ वह्निशिखाकारा ललाटे चंद्रसन्निभा || 105 ||

भ्रूमध्ये भास्कराकारा सर्वताराकृतिर्हृदि |
कृत्तिकादिभरण्यंतनक्षत्रेष्ट्यर्चितोदया || 106 ||

ग्रहविद्यात्मिका ज्योतिर्ज्योतिर्विन्मतिजीविका |
ब्रह्मांडगर्भिणी बाला सप्तावरणदेवता || 107 ||

वैराजोत्तमसाम्राज्या कुमारकुशलोदया |
बगला भ्रमरांबा च शिवदूती शिवात्मिका || 108 ||

मेरुविंध्यादिसंस्थाना काश्मीरपुरवासिनी |
योगनिद्रा महानिद्रा विनिद्रा राक्षसाश्रिता || 109 ||

सुवर्णदा महागंगा पंचाख्या पंचसंहतिः |
सुप्रजाता सुवीरा च सुपोषा सुपतिश्शिवा || 110 ||

सुगृहा रक्तबीजांता हतकंदर्पजीविका |
समुद्रव्योममध्यस्था समबिंदुसमाश्रया || 111 ||

सौभाग्यरसजीवातुस्सारासारविवेकदृक् |
त्रिवल्यादिसुपुष्टांगा भारती भरताश्रिता || 112 ||

नादब्रह्ममयीविद्या ज्ञानब्रह्ममयीपरा |
ब्रह्मनाडी निरुक्तिश्च ब्रह्मकैवल्यसाधनं || 113 ||

कालिकेयमहोदारवीर्यविक्रमरूपिणी |
बडबाग्निशिखावक्त्रा महाकबलतर्पणा || 114 ||

महाभूता महादर्पा महासारा महाक्रतुः |
पंचभूतमहाग्रासा पंचभूताधिदेवता || 115 ||

सर्वप्रमाणा संपत्तिः सर्वरोगप्रतिक्रिया |
ब्रह्मांडांतर्बहिर्व्याप्ता विष्णुवक्षोविभूषिणी || 116 ||

शांकरी विधिवक्त्रस्था प्रवरा वरहेतुकी |
हेममाला शिखामाला त्रिशिखा पंचलोचना || 117 || [पंचमोचना]

सर्वागमसदाचारमर्यादा यातुभंजनी |
पुण्यश्लोकप्रबंधाढ्या सर्वांतर्यामिरूपिणी || 118 ||

सामगानसमाराध्या श्रोत्रकर्णरसायनं |
जीवलोकैकजीवातुर्भद्रोदारविलोकना || 119 ||

तटित्कोटिलसत्कांतिस्तरुणी हरिसुंदरी |
मीननेत्रा च सेंद्राक्षी विशालाक्षी सुमंगळा || 120 ||

सर्वमंगळसंपन्ना साक्षान्मंगळदेवता |
देहहृद्दीपिका दीप्तिर्जिह्मपापप्रणाशिनी || 121 ||

अर्धचंद्रोल्लसद्दंष्ट्रा यज्ञवाटीविलासिनी |
महादुर्गा महोत्साहा महादेवबलोदया || 122 ||

डाकिनीड्या शाकिनीड्या साकिनीड्या समस्तजुट् |
निरंकुशा नाकिवंद्या षडाधाराधिदेवता || 123 ||

भुवनज्ञानिनिःश्रेणी भुवनाकारवल्लरी |
शाश्वती शाश्वताकारा लोकानुग्रहकारिणी || 124 ||

सारसी मानसी हंसी हंसलोकप्रदायिनी |
चिन्मुद्रालंकृतकरा कोटिसूर्यसमप्रभा || 125 ||

सुखप्राणिशिरोरेखा सददृष्टप्रदायिनी |
सर्वसांकर्यदोषघ्नी ग्रहोपद्रवनाशिनी || 126 ||

क्षुद्रजंतुभयघ्नी च विषरोगादिभंजनी |
सदाशांता सदाशुद्धा गृहच्छिद्रनिवारिणी || 127 ||

कलिदोषप्रशमनी कोलाहलपुरस्थिता |
गौरी लाक्षणिकी मुख्या जघन्याकृतिवर्जिता || 128 ||

माया विद्या मूलभूता वासवी विष्णुचेतना |
वादिनी वसुरूपा च वसुरत्नपरिच्छदा || 129 ||

छांदसी चंद्रहृदया मंत्रस्वच्छंदभैरवी |
वनमाला वैजयंती पंचदिव्यायुधात्मिका || 130 ||

पीतांबरमयी चंचत्कौस्तुभा हरिकामिनी |
नित्या तथ्या रमा रामा रमणी मृत्युभंजिनी || 131 ||

ज्येष्ठा काष्ठा धनिष्ठांता शरांगी निर्गुणप्रिया |
मैत्रेया मित्रविंदा च शेष्यशेषकलाशया || 132 ||

वाराणसीवासरता चार्यावर्तजनस्तुता |
जगदुत्पत्तिसंस्थानसंहारत्रयकारणं || 133 ||

त्वमंब विष्णुसर्वस्वं नमस्तेऽस्तु महेश्वरि |
नमस्ते सर्वलोकानां जनन्यै पुण्यमूर्तये || 134 ||

सिद्धलक्ष्मीर्महाकाळि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते |
सद्योजातादिपंचाग्निरूपा पंचकपंचकं || 135 ||

यंत्रलक्ष्मीर्भवत्यादिराद्याद्ये ते नमो नमः |
सृष्ट्यादिकारणाकारविवते दोषवर्जिते || 136 ||

जगल्लक्ष्मीर्जगन्मातर्विष्णुपत्नि नमोऽस्तु ते |
नवकोटिमहाशक्तिसमुपास्यपदांबुजे || 137 ||

कनत्सौवर्णरत्नाढ्ये सर्वाभरणभूषिते |
अनंतनित्यमहिषी प्रपंचेश्वरनायकि || 138 ||

अत्युच्छ्रितपदांतस्थे परमव्योमनायकि |
नाकपृष्ठगताराध्ये विष्णुलोकविलासिनि || 139 ||

वैकुंठराजमहिषि श्रीरंगनगराश्रिते |
रंगनायकि भूपुत्रि कृष्णे वरदवल्लभे || 140 ||

कोटिब्रह्मादिसंसेव्ये कोटिरुद्रादिकीर्तिते |
मातुलुंगमयं खेटं सौवर्णचषकं तथा || 141 ||

पद्मद्वयं पूर्णकुंभं कीरं च वरदाभये |
पाशमंकुशकं शंखं चक्रं शूलं कृपाणिकां || 142 ||

धनुर्बाणौ चाक्षमालां चिन्मुद्रामपि बिभ्रती |
अष्टादशभुजे लक्ष्मीर्महाष्टादशपीठगे || 143 ||

भूमिनीलादिसंसेव्ये स्वामिचित्तानुवर्तिनि |
पद्मे पद्मालये पद्मि पूर्णकुंभाभिषेचिते || 144 ||

इंदिरेंदिंदिराभाक्षि क्षीरसागरकन्यके |
भार्गवि त्वं स्वतंत्रेच्छा वशीकृतजगत्पतिः || 145 ||

मंगळं मंगळानां त्वं देवतानां च देवता |
त्वमुत्तमोत्तमानां च त्वं श्रेयः परमामृतं || 146 ||

धनधान्याभिवृद्धिश्च सार्वभौमसुखोच्छ्रया |
आंदोळिकादिसौभाग्यं मत्तेभादिमहोदयः || 147 ||

पुत्रपौत्राभिवृद्धिश्च विद्याभोगबलादिकं |
आयुरारोग्यसंपत्तिरष्टैश्वर्यं त्वमेव हि || 148 ||

परमेशविभूतिश्च सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरा गतिः |
सदयापांगसंदत्तब्रह्मेंद्रादिपदस्थितिः || 149 ||

अव्याहतमहाभाग्यं त्वमेवाक्षोभ्यविक्रमः |
समन्वयश्च वेदानामविरोधस्त्वमेव हि || 150 ||

निःश्रेयसपदप्राप्तिसाधनं फलमेव च |
श्रीमंत्रराजराज्ञी च श्रीविद्या क्षेमकारिणी || 151 ||

श्रींबीजजपसंतुष्टा ऐं ह्रीं श्रीं बीजपालिका |
प्रपत्तिमार्गसुलभा विष्णुप्रथमकिंकरी || 152 ||

क्लींकारार्थसवित्री च सौमंगळ्याधिदेवता |
श्रीषोडशाक्षरीविद्या श्रीयंत्रपुरवासिनी || 153 ||

सर्वमंगळमांगळ्ये शिवे सर्वार्थसाधिके |
शरण्ये त्र्यंबके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते || 154 ||

पुनः पुनर्नमस्तेऽस्तु साष्टांगमयुतं पुनः |

सनत्कुमार उवाच |
एवं स्तुता महालक्ष्मीर्ब्रह्मरुद्रादिभिस्सुरैः |
नमद्भिरार्तैर्दीनैश्च निस्सत्वैर्भोगवर्जितैः || 1 ||

ज्येष्ठाजुष्टैश्च निःश्रीकैस्संसारात्स्वपरायणैः |
विष्णुपत्नी ददौ तेषां दर्शनं दृष्टितर्पणं || 2 ||

शरत्पूर्णेंदुकोट्याभधवळापांगवीक्षणैः |
सर्वान् सत्वसमाविष्टांश्चक्रे हृष्टा वरं ददौ || 3 ||

महालक्ष्मीरुवाच |
नाम्नां साष्टसहस्रं मे प्रमादाद्वापि यस्सकृत् |
कीर्तयेत्तत्कुले सत्यं वसाम्याचंद्रतारकं || 4 ||

किं पुनर्नियमाज्जप्तुर्मदेकशरणस्य च |
मातृवत्सानुकंपाहं पोषकी स्यामहर्निशं || 5 ||

मन्नाम स्तुवतां लोके दुर्लभं नास्ति चिंतितं |
मत्प्रसादेन सर्वेऽपि स्वस्वेष्टार्थमवाप्स्यथ || 6 ||

लुप्तवैष्णवधर्मस्य मद्व्रतेष्ववकीर्णिनः |
भक्तिप्रपत्तिहीनस्य वंद्यो नाम्नां जपोऽपि मे || 7 ||

तस्मादवश्यं तैर्दोषैर्विहीनः पापवर्जितः |
जपेत्साष्टसहस्रं मे नाम्नां प्रत्यहमादरात् || 8 ||

साक्षादलक्ष्मीपुत्रोऽपि दुर्भाग्योऽप्यलसोऽपि वा |
अप्रयत्नोऽपि मूढोऽपि विकलः पतितोऽपि च || 9 ||

अवश्यं प्राप्नुयाद्भाग्यं मत्प्रसादेन केवलं |
स्पृहेयमचिराद्देवा वरदानाय जापिनः |
ददामि सर्वमिष्टार्थं लक्ष्मीति स्मरतां ध्रुवं || 10 ||

सनत्कुमार उवाच |
इत्युक्त्वाऽंतर्दधे लक्ष्मीर्वैष्णवी भगवत्कला |
इष्टापूर्तं च सुकृतं भागधेयं च चिंतितं || 11 ||

स्वं स्वं स्थानं च भोगं च विजयं लेभिरे सुराः |
तदेतद्प्रवदाम्यद्य लक्ष्मीनामसहस्रकं |
योगिनः पठत क्षिप्रं चिंतितार्थानवाप्स्यथ || 12 ||

गार्ग्य उवाच |
सनत्कुमारयोगींद्र इत्युक्त्वा स दयानिधिः |
अनुगृह्य ययौ क्षिप्रं तांश्च द्वादशयोगिनः || 13 ||

तस्मादेतद्रहस्यं च गोप्यं जप्यं प्रयत्नतः |
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां भृगुवासरे || 14 ||

पौर्णमास्याममायां च पर्वकाले विशेषतः |
जपेद्वा नित्यकार्येषु सर्वान्कामानवाप्नुयात् || 15 ||

इति श्रीस्कंदपुराणे सनत्कुमारसंहितायां लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णं ||